नातेदारी श्रेणियाँ
(Kinship Categories)

नातेदारी को निकटता, घनिष्ठता तथा आत्मीयता के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। जी॰ पी॰ मरडॉक का इस क्षेत्र में गहन अध्ययन है। नातेदारी की चार प्रमुख श्रेणियों का उल्लेख किया जाता है, ये निम्नलिखित है:—

(1) प्राथमिक नातेदारी (Primary Kinship):— प्राथमिक नातेदार जनक परिवार और जनन परिवार से जुड़े व्यक्ति कहलाते है। जनक परिवार वह है जिसमें व्यक्ति जन्म लेता है और पलता है। इस प्रकार माता-पिता, भाई-बहन व्यक्ति के प्राथमिक नातेदार हुए। जनन परिवार वह है जिसमें व्यक्ति विवाह से संबंधित होता है इस प्रकार पति-पत्नी, पुत्र और पुत्री व्यक्ति के प्राथमिक नातेदार हुए। दुबे ने कुल 8 प्रकार के संबंधों का उल्लेख प्राथमिक नातेदार के रूप में किया है, ये है— पति-पत्नी, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, माता-पुत्री, भाई-बहन, बहन-बहन और भाई-बहन। ये सभी संबंध विवाह व रक्त से संबंधित है।

(2) द्वितीयक नातेदारी (Secondary Kinship):— व्यक्ति के प्राथमिक नातेदार का अपना जो प्राथमिक नातेदार होता है उसे द्वितीयक नातेदार कहा जाता है। उदाहरणस्वरूप — पिता हमारे प्राथमिक नातेदार है। हमारे पिता के प्राथमिक नातेदार उनके पिता है। अर्थात हमारे दादाजी। इस प्रकार हमारे दादाजी हमारे द्वितीयक नातेदार कहलाए। जी॰ पी॰ मरडॉक ने 33 प्रकार के द्वितीयक नातेदार का

उल्लेख किया है।

(3) तृतीयक नातेदारी (Tertiary Kinship): व्यक्ति के द्वितीयक नातेदारी का अपना जो प्राथमिक नातेदार होता है उसे तृतीयक नातेदार कहा जाता है। यानि द्वितीयक नातेदार का प्राथमिक नातेदार तृतीयक नातेदार कहलाये। उदाहरणस्वरूप — पिताजी हमारे प्राथमिक नातेदार है। पिताजी के पिताजी अर्थात दादाजी हमारे द्वितीयक नातेदार हुए। दादाजी के पिताजी यानि पितामह हमारे तृतीयक नातेदार कहलाये। इसी तरह दादीजी की माँ दादीजी का भाई, दादाजी की बहन तृतीयक नातेदार है। जी. पी मरडाक ने कुल 15 प्रकार के तृतीयक नातेदारों का उल्लेख किया है।

(4) दूरस्थ नातेदारी (Distance Kinship): व्यक्ति के तृतीयक नातेदार के प्राथमिक नातेदार व्यक्ति के दूरस्थ नातेदार कहलाते है। उदाहरणस्वरूप — दादाजी के दादाजी, नानीजी के दादाजी, नानीजी के दादीजी आदि। दूरस्थ नातेदारी की संख्या बहुत बड़ी हो सकती है।